15–7–67 ओमशांति रात्रीक्लास

बच्चे अनुभव है आगे भक्ति में थे अब ज्ञान में हैं। गोया सदगति में जा रहे हैं। यह ज्ञान मार्ग है। वो भक्तिमार्ग है। अनुभव तो सुनाना होता है ना। अब हम पवित्र रहे हैं। बाप से वर्सा लेने लिए। वापस सबको जाना है। सबको वापस फिर आना है। यह तुम्हारी बुद्धि में है। जो भी एक्टर्स हैं वो सब कैसे आते हैं ,कैसे वृद्धि को पाते हैं फिर चले जाते हैं। पहले2 छोटा झाड़ ही आवेगा। यहां वाले जो जावेंगे सभी को इकट्ठे नहीं आवेंगे ना। यह झाड़ निराकारी जाकर बनेगा फिर साकारी झाड़ होगा। वो झाड़ सिर्फ सूर्यवंशी बच्चों को समझाना बहुत सहज है। जो जिस धर्म का है उनका स्थापक फिर भी उसी समय पर आवेगा। पीछे वाले आते ही पिछाड़ी में हैं। वो इतना सुख ले नहीं सकते हैं। ड्रामा बना ही हुआ है। तुम बच्चों को डिटेल में समझानी मिलती है। बाप ही याद तो अति सहज है। याद और वर्सा। बच्चों को ही सभी को समझाना होता है। वर्से की बात है। ना ड्रामा की, ना सा. की,ना ही परमात्मा की सा. की बात उठती है। अपना तो काम है बाप और बाप के वर्से से। जितना2 जो अच्छी रीति निश्चय बुद्धि होते जावेंगे तुम समझ जावेंगे कि यह शुरू से भक्ति करते आते हैं। पीछे भक्ति करने वाले पीछे आवेंगे। भक्ति का हिसाब जरूर लागू रहता है। तब ही गाया जाता है कि आत्मा परमात्मा अलग रहे.....बच्चों को पुरुषार्थी सतोप्रधान बनने का ही करना है और हर एक को बाप का परिचय देना है। सर्विस में कभी तंग नहीं होना है। छोटों को भी बड़ों को भी सर्विस करनी है। बड़े2 दुकानों पर अच्छे ही समझाने वाले रखेंगे। जैसे2 कल्प पहले स्थापना हुई है अब भी होती रहेगी। खुशी से ही सर्विस में लगना चाहिए। तंग नहीं होना चाहिए। स्टुडेंट्स को पढ़कर पास होना है। पढ़ना अलग है। लड़ना–झगड़ना अलग है। वेस्ट टाइम नहीं करना है। नाराज होकर बैठ नहीं जाना चाहिए। फलाने से यह हुआ,उसने यह कहा,क्यों कहा,सो रूठकर नहीं बैठना चाहिए। मुरली भी जरूर पढ़नी चाहिए। उसमें सर्विस की बहुत युक्तियां मिलती हैं। बच्चों को हुल्लास में आया रहना चाहिए। खुशी का पारा चढ़ना चाहिए। बाप जो स्वर्ग का मालिक बनाते हैं तो खुशी होनी चाहिए। बड़े आदमी पास जन्म लेने वाले को तो खुश होना चाहिए ना। यह है बाप से वर्सा लेने की युक्ति। बच्चों को पढ़ना जरूरी है। रोज मुरली पढ़ना धारण करना है। घर में घाटा है,फायदा है,धंधा ठीक है वा नहीं है इन बातों का ज्ञान से तो वास्ता ही नहीं है। गरीब हैं उनको भी कहा जाता है बाप का परिचय दो। जो बेहद का बाप होकर गया है भारत को स्वर्ग बनाकर गये फि रावण ने छीन लिया। अब फिर बाप कहते हैं कि पावन बनो। यह कोई हद की बात नहीं है। बेहद की बात है। अब तुम जानते हो बाबा हमको नये विश्व के लिए पुरुषार्थ करवा रहे हैं। याद के बल से पवित्र होने से ही हम पवित्र दुनियां का मालिक बनते हैं। यह है याद। योग अक्षर भी नहीं। बाप ही याद अक्षर लवली है। बाप ने कहा है मामेकम् याद करो। ऐसा नहीं कहा है कि मामेकम् योग लगाओ। याद कहा है। सतोप्रधान आये थे। फिर यहां से सतोप्रधान बनकर जाना है। वापस कोई भी जा नहीं सकते हैं। सा. की सभी बातें भक्तिमार्ग की हैं। यहां ना आत्मा अपना सा. कर सकती है,ना ही परमात्मा बाप का। बाप ने समझाया है मैं भी बिंदी हूँ तुम भी बिंदी हो। उसमें ही सारा ज्ञान है। ऐसे नहीं कि मैं बड़ा हूँ। यह नहीं समझना चाहिए परमात्मा बड़ा है। परम माना दूर से दूर रहने वाला। ड्रामा में राज भी अच्छा रखा हुआ है। पतितों को पावन नहीं तो कैसे बनावें। ऐसी बातें याद करके खुशी में रहना चाहिए। तुम बच्चों को तो शिवबाबा ने एडॉप्ट किया है। राजयोग सिखा रहे हैं। तुम समझेंगे कि बरोबर यह रथ भाग्यशाली है। 84जन्म लिए हैं। फिर बाप ने प्रवेश कर यह नाम रखा है। सब जानते हैं कि यह साधारण तन था। इनमें बाबा प्रवेश कर नाम बदलाया है। नहीं तो ब्रह्मा का बाप चाहिए। वो फिर कहां से आवे। तीन बच्चों में से भी एक ब्रह्मा ही यहां का है। ऐसे नहीं कि अभी तीनों को रचा है।.....ओम